• परंपरा...

राधा–श्रीकृष्ण का विवाह...

अमर प्रेम का जिक्र होते ही पहला नाम राधा-कृष्ण का लिया जाता है। मगर कृष्ण की पत्नी के तौर पर हम रुकमणि को ही जानते हैं। कहा जाता है कि राधा-कृष्ण का मेल कभी नहीं हुआ। मगर ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार यदुवंशियों के कुलगुरु गर्ग ऋषि द्वारा लिखी गर्ग संहिता की कथा के अनुसार कृष्ण और राधा का विवाह बचपन में ही हो गया था।

कहा जाता है कि एक बार नंदबाबा कृष्ण को लेकर बाजार गए थे, वहीं उन्हें एक सुंदर और अलौकिक कन्या दिखाई दी, जो कि राधा थीं। कृष्ण और राधा पहली बार यहीं मिले थे। उस स्थान को आज भी संकेत तीर्थ नाम से जाना जाता है। मान्यता है कि वह जगह नंदगांव और बरसाने के बीच पड़ती है, जहां आज एक मंदिर भी है। यह भी माना जाता है कि पिछले जन्म में दोनों ने तय किया था कि अगले जन्म में वह राधा-कृष्ण के रूप में जन्म लेंगे तो पहली बार यहीं मिलेंगे।

गर्ग संहिता के अनुसार जंगल में खुद ब्रह्मा ने राधा और कृष्ण का गंधर्व विवाह कराया था। मान्यता है कि कृष्ण अक्सर पिता के साथ भंडिर ग्राम जाते थे, जहां

वे राधा से मिले। एक दिन कृष्ण भंडिर ग्राम पहुंचे अचानक मौसम बदल गया। तेज हवाओं के साथ वर्षा होने लगी। देखते ही देखते अंधेरा सा हो गया। कृष्ण बाल्यावस्था से किशोरावस्था में आ गए। तभी ब्रह्माजी ने प्रकट होकर दोनों की मंशा जानते हुए राधा की सहेलियों विशाखा और ललिता की उपस्थिति में राधा-कृष्ण का गंधर्व विवाह करवा दिया। विवाह पूरा होते ही माहौल पूर्व जैसा हो गया और ब्रह्माजी समेत राधा, विशाखा और सरिता अंतर्ध्यान हो गए।

प्राचीन भारतीय में आठ तरह के विवाह की मान्यता है। इनमें एक है गधर्व विवाह। इसमें वर और वधु अग्नि को साक्षी मानकर एक दूसरे को पति-पत्नी मानते हैं। फिर चाहे वे ब्रह्म विवाह के नियमों के विरुद्ध ही क्यूं न हो, यानी दोनों अलग वर्ण, जाति, समुदाय से हों या दूसरे किसी कारण से विवाह नहीं हो पा रहा हो। इसमें माता-पिता या परिवार का भी होना जरूरी नहीं बताया गया है।

• कष्ट करे दूर...

राशिनुसार धारण करें रत्न...

कुछ पुराणों का मत है कि दैत्यराज बलि का वध करने के लिए भगवान त्रिलोकीनाथ ने वामन-अवतार धारण किया और उसके गर्व को चूर किया। इस समय भगवान के चरण स्पर्श से दैत्यराज बलि का सारा शरीर रत्नों का बन गया, तब देवराज इंद्र में उस पर वज्र की चोट की, इस प्रकार टूट कर बिखरे हुए बलि के रत्नमय खंडों को भगवान शिव ने अपने त्रिशूल में धारण कर लिया और उसमें नवग्रह और बारह राशियों के प्रभुत्व का आधार करके पृथ्वी पर गिरा दिया। पृथ्वी पर गिराए गए इन खंडों से ही विभिन्न रत्नों की खानें पृथ्वी के गर्भ में बन गईं। रत्नों की उत्पत्ति के विषय में एक अन्य कथा भी ग्रंथों में आती है। देवता और दैत्यों ने समुद्र मंथन किया तो 14 रत्न पदार्थ निकले। उसमें लक्ष्मी, उच्चैश्रवा, ऐरावत आदि के कौस्तुभ मणि को अपने कंठ में धारण कर लिया। इससे निकले अमृत को लेकर देव और दानवों में संघर्ष हुआ। अमृत का स्वर्ण कलश असुरराज लेकर भाग खड़े हुए। कहते हैं कि इस छीना-झपटी में अमृत की कुछ बूंदें जहां-जहां गिरीं वहां सूर्य की किरणों द्वारा सूखकर वे अमृतकण प्रकृति की रज में मिश्रित होकर विविध प्रकार के रत्नों में परिवर्तित हो गए। रत्न चौरासी माने गए हैं। नौ प्रमुख रत्न तथा शेष उपरत्न माने जाते हैं। इन नौ प्रमुख रत्नों का नवग्रहों से संबंध माना जाता है। सूर्य- माणिक्य, चन्द्रमा-मोती, मंगल- मूंगा, बुध- पन्ना, बृहस्पति- पुखराज, शुक्र- हीरा, शनि- नीलम, राहु- गोमेद, केतु- लहसुनिया। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार ग्रहों के अशुभ प्रभावों की वजह से व्यक्ति का जीवन बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। ग्रहों के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए रत्न धारण करने की सलाह दी जाती है। ज्योतिष में 12 राशियां होती हैं और हर राशि का कोई न कोई ग्रह स्वामी होता है। स्वामी ग्रह का राशि पर पूरा प्रभाव रहता है। आज इस लेख के माध्यम से हम आपको बताएंगे राशिनुसार किस रत्न को धारण करना चाहिए।

● **मेष:** मेष राशि के स्वामी मंगल देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को मूंगा धारण करना चाहिए।

● **वृष:** इस राशि के स्वामी शुक्र देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को हीरा, ओपल या जरकन धारण करना चाहिए।

● **मिथुन:** राशि के स्वामी बुद्ध देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को पन्ना धारण करना चाहिए।

● **कर्क:** कर्क राशि के स्वामी चन्द्रमा हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को मोती धारण करना चाहिए।

● **सिंह :** सिंह राशि के स्वामी सूर्य देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को माणिक धारण करना चाहिए।

● **कन्या :** राशि के स्वामी बुद्ध देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को पन्ना धारण करना चाहिए।

● **तुला :** तुला राशि के स्वामी शुक्र देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को हीरा, ओपल या जरकन धारण करना चाहिए।

● **वृश्चिक :** राशि के स्वामी मंगल देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को मूंगा धारण करना चाहिए।

● **धनु :** धनु राशि के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को पुखराज धारण करना चाहिए।

● **मकर :** राशि के स्वामी शनि देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को नीलम धारण करना चाहिए।

● **कुंभ :** कुंभ राशि के स्वामी शनि देव हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को नीलम धारण करना चाहिए।

● **मीन :** राशि के स्वामी देव गुरु देवगुरु बृहस्पति हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस राशि के जातकों को पुखराज धारण करना चाहिए।

ग्रहों के अशुभ प्रभावों की वजह से व्यक्ति का जीवन बुरी तरह प्रभावित हो जाता है। ग्रहों के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए रत्न धारण करने की सलाह दी जाती है।

ज्योतिष में 12 राशियां होती हैं और हर राशि का कोई न कोई ग्रह स्वामी होता है। स्वामी ग्रह का राशि पर पूरा प्रभाव रहता है। आइए जानते हैं राशिनुसार किस रत्न को धारण करना चाहिए...

▶▶ बिना सोचे समझे इस्तेमाल ना करें: यूं तो रत्न एक किस्म के पत्थर ही होते हैं, लेकिन सभी पत्थर रत्न नहीं कहे जाते। इस बात को बेहतर ढंग से समझ लिया जाए तो हम रत्न को पत्थरों में से छांटकर निकाल सकते हैं। उनकी शिनाख्त कर सकते हैं और फिर उन्हें अपने दैनिक जीवन में बेहतर उपयोग कर सकते हैं यदि ऐसा न करके, हम बिना सोचे समझे रत्नों का इस्तेमाल करते हैं तो उसका उल्टा असर भी पड़ता है। ऐसी स्थिति में हमें नुकसान उठाना पड़ सकता है, इसलिए रत्नों का उपयोग जांच परख तथा सोच विचारकर करना चाहिए।

▶▶ इस संबंध में ज्योतिषि पंडित नीरज धूमल का कहना है कि कुछ पत्थर के पदार्थों के गुण चरित्र एवं विशेषताएं ऐसी होती हैं, जिन्हें देखते ही रत्न कह दिया जाता है। जैसे हीरा, माणिक्य, वैदूर्य, नीलम, पुखराज, पन्ना आदि को लोग रत्नों के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में यह सारे पत्थर हैं लेकिन बेशकीमती पत्थर। अंग्रेजी में इन्हें प्रिशियस स्टोन (बहुमूल्य पत्थर) कहते हैं।

▶▶ रत्न का विशेष अर्थ श्रेष्ठतत्व भी है, इसी वजह से इसे खास व्यक्ति को उनके महत्वपूर्ण कार्य के लिए रत्न शब्द से विभूषित किया जाता है। इतना ही नहीं भाग्य परिवर्तन में भी रत्न अपना प्रभाव दिखाता है। पृथ्वी के अंदर लाखों वर्षों तक पड़े रहने के कारण उसमें पृथ्वी का चुंबक तत्व तथा तेजसव आ जाता है। पृथ्वी के जिस क्षेत्र में जिस ग्रह का असर अधिक होता है, उस क्षेत्र के आसपास उस ग्रह से संबंधित रत्न अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। वास्तव में पृथ्वी ग्रहों के सहयोग से अपने अंदर रत्नों का निर्माण करती है, अत: इसे रत्नग भी कहा जाता है।

▶▶ भौगोलिक दृष्टि से रत्न तीन प्रकार के होते हैं। इनमें पहला रत्न खनिज रत्न है। खनिज रत्न खदानों से प्राप्त किए जाते हैं। दूसरे जैविक रत्न होते हैं जिन्हें समुद्र से प्राप्त किया जाता है और तीसरे वनस्पतिक रत्न होते हैं। हिन्दू प्राचीन ग्रंथों में उच्च कोटि के लभभग 84 प्रकार के रत्न बताए गए हैं। समय-समय पर बहुत से नए रत्नों की खोज भी हुई है। रत्न ज्योतिष में नवरत्न के अलावा भी कई अन्य रत्न भी है। नव रत्न में गोमेद, नीलम, पन्ना, पुखराज, माणिक्य, मूंगा, मोती, लहसुनिया और हीरा रत्न आते हैं।

• शिव पूजा...

वाहन सुख के लिए...

सोमवार को भगवान शिव का दिन माना जाता है। इस दिन सच्चे मन से भगवान शिव की उपासना करने से सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस दिन व्रत रखने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सोमवार के दिन कुछ उपाय कर भगवान शिव को प्रसन्न किया जा सकता है। सोमवार सुबह स्नान कर शिव चालीसा का पाठ करें। सफेद रंग के वस्त्र इस दिन धारण करें। मन में आशंति रहती है तो सोमवार को चंदन का तिलक लगाएं। इस दिन दूध का दान करें, ऐसा करने से आर्थिक स्थिति बेहतर होती है। सोमवार को चांदी का छल्ला धारण करने से कार्यक्षेत्र में प्रगति होती है। सोमवार के दिन गाय को हरी घास खिलाएं। सोमवार को जरूरतमंद लोगों को खीर खिलाना शुभ फल प्रदान करता है। वाहन सुख चाहते हैं तो सोमवार को चमेली के फूल शिवलिंग पर अर्पित करें। सोमवार को निवेश करना शुभ माना जाता है। सोमवार को गृह निर्माण कार्य की शुरुआत करना भी शुभ माना जाता है। चंद्रमा के दोष दूर करने के लिए इस दिन दूध का दान करें। सोमवार को शक्कर युक्त भोजन का त्याग करें। चंद्रमा माता से संबंधित ग्रह है, इसलिए माता को कठोर वचन न बोलें। सोमवार के दिन महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें। सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध अर्पित करने से सच्चा जीवनसाथी मिलता है।

• सफाई का विशेष ध्यान

घर के भीतर और बाहर सफाई का विशेष ध्यान रखें। घर के मुख्य दरवाजे के सामने कोई गड्ढा है तो इसे मिट्टी से भर दें। हमेशा ध्यान रखें कि घर के भीतर और घर के मुख्य द्वार के सामने कभी गंदगी न रहे। अगर घर के सामने पेड़ या खंभा है और इसे हटाया नहीं जा सकता है तो घर के मुख्य द्वार पर रोजाना स्वास्तिक बनाएं। घर के मुख्य द्वार के आगे कभी जल एकत्र न होने दें। घर की दीवारों में सीलन या दरार आ गई है तो इसका प्रभाव घर के मुखिया के स्वास्थ्य पर पड़ता है। अगर ऐसा है तो घर की तुरंत मरम्मत कराएं।